



मानव अधिकारों तथा मूल्यों का नैतिक विवेचन।

(Manav Adhikaron Tatha Moolyon Ka Naitik Vivechan)

Uday Sarkar[†]

Abstract:

The primary objective of this article is to explain and examine Human rights and values from Vedic perspectives. Though a clinical systematic development in ethics and values we can identify in the Western tradition, also in India, more specifically in Vedic Philosophy, we witnessed a discussion concerning human rights and values. The core of the Indian philosophical tradition lies within the ethical aspects of Human life. Almost every Indian philosophical tradition emphasises human values from ethical, Moral, and religious perspectives. In Indian tradition, the concept of values is interconnected with the concept of Dharma. The main theme of this paper is reflected within the discussion on dharma, values, and purusvarthas from the Vedic perspectives.

This article is composed of three sections. The first section consists of an introductory section in which I made a discussion on different values of human life. The second section is confined to discussing human values from the Vedic perspective. And, the final section is the concluding remarks in which the article suggests the relevance of the Vedic concept of human values in the present global perspectives.

Keywords: Dharma, Artha, Kama, Value, Human Rights.

[†] Assistant Professor, Department of Philosophy, Seth Soorajmull Jalan Girls' College, Kolkata, West Bengal, India.

(I)

मानव जीवन में अधिकारों के साथ, साथ मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। आधुनिक मानव वैज्ञानिक एवं भौतिक क्षेत्र में प्रगति की पराकाष्ठा प्राप्त है। मनुष्य चन्द्रमा तक पहुँच चुका हैं। मंगल ग्रह आदि पर उड़ाने निरंतर जारी है। परन्तु मानव के जीवन मूल्यों की अधोगति निरंतर जारी है। ऐसी स्थिति में मूल्यों को नैतिक मानदंडों के रूप में स्वीकार करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव अधिकार तथा मूल्य सम्बन्धी विवेचन पाश्चात्य तथा भारतीय नीतिशास्त्रों में किया गया है। जैसे - पाश्चात्य नीतिशास्त्र में अधिकारों के साथ-साथ मूल्यों का विवेचन साध्यमूल्य (Intrinsic Value) तथा साधनमूल्य (Extrinsic Value) के रूप में किया गया है। इसके अतिरिक्त –

- 1- शुभ और अशुभ (Positive and Negative- Good and Evil).
- 2- स्थायी और अस्थायी (Permanent and Transient).
- 3- उत्पादक तथा अनुत्पादक (Productive and Unproductive).
- 4- आर्थिक मूल्य (Economic Value). जैसे- धन-दौलत।
- 5- मनोरन्जन के मूल्य (Value of Recreation). जैसे- सिनेमा।

अनेकों प्रकार के मूल्यों का वर्णन किया गया है। मूल्यों के इस प्रकार वर्गीकरण को समेटते हुए कहा सकता है-

- 1- शारीरिक मूल्य (Bodily Value).
- 2- सामाजिक मूल्य (Social Value). तथा
- 3- आध्यात्मिक मूल्य (Spiritual Value).

उपर्युक्त सभी वर्गीकरणों को - जैविकमूल्य (Organic Value) एवं अतिजैविक मूल्य (Hyper-Organic Value) कहा जा सकता है।

भारतीय नीतिशास्त्र में जीवन के नैतिक मूल्यों का सबसे पहले व्यावहारिक पक्ष एवं आध्यात्मिक पक्ष का विवेचन करते हुए मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य (Highest Goal/Aim) निःश्रेयस की बात करते हैं। दूसरे शब्दों में इसे *Summum Bonum* भी कहते हैं। भारतीय नीतिशास्त्र में वैयक्तिक सद्गुणों के अभ्यास के माध्यम से अधिकार-कर्तव्य तथा मूल्यों का निर्धारण- को महत्व प्रदान किया गया है। इसी क्रम में - धर्म, पुरुषार्थ, ऋण, यज्ञ इत्यादि का विवेचन किया गया है। अधिकार को पश्चात् करते हुए कर्तव्य पालन को सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। अतः अधिकार परिणाम के रूप में विवेचन किया गया है। साथ-

साथ ज्ञान आरोहण करना एक प्रकार कर्तव्य के रूप में देखते हुए पहले सद्ज्ञान अतः पर अपवर्ग की प्राप्ति को लक्ष्य बताया गया है। जिसे Highest Aim कहा गया है।

इसी क्रम में पुरुषार्थ चतुष्टय में धर्म का विवेचन करना आवश्यक प्रतीत होता है। उससे पूर्व पुरुषार्थ का अभिप्राय जो पुरुष के लिए आवश्यक तथा लाभदायक हो उसका चतित्र धारण होना चाहिए। यहाँ यह स्पष्ट कर देना अच्छा होगा की व्यक्ति के कर्मों की लक्ष्य को ही पुरुषार्थ संज्ञा प्राप्त है। यह एक समन्वयवादी दृष्टिकोण है। मानव जीवन के सभी आवश्यकताओं के साथ पुरुषार्थ सम्बन्ध युक्त है। मानव जीवन के पुरुषार्थ चार है। इन चारों पुरुषार्थों का संक्षिप्त चित्रण निम्न प्रकार किया जाता है।

(II)

A) धर्म –

धर्म शब्द धृ -धारणे धातु से अर्तिस्तुसुहुसृध 0(उणादि कोश 1/140) सूत्र से प्राप्त मन् प्रत्यय के योग से धर्म शब्द निष्पन्न होता है। अर्थात् धारणात् धर्म इत्याहुः ध्रियते अनेन लोकः - इत्यादि व्युत्पत्ति के अनुसार -जिसे आत्मोन्नति और उत्तम सांसारिक सुख हेतु धारण किया जाए, अथवा व्यवस्था व मर्यादाओं का ध्यान रखा जाये - केवल उसे ही धर्म संज्ञा प्राप्त है।

भारतीय नीतिशास्त्र का आकर ग्रन्थ मनुस्मृति में धर्म शब्द के अर्थ का विवेचन बहुत व्यापक दृष्टिकोण से किया गया है। जैसे आध्यात्मिक उद्देश्यसाधक- जो मुख्यार्थ है एवं लौकिक व्यवहारसाधक कहा गया है-वेदाभ्यासः तपः ज्ञानं इन्द्रियाणां च संयमः, धर्मक्रिया आत्मचिन्ता च निःश्रेयसकरं परम्। मनुस्मृति ०। इस श्लोक में वेद का अभ्यास, तप, वेदादि सत्यविद्याओं का ज्ञान प्राप्ति, इन्द्रिय संयम, धार्मिक क्रिया और आत्मचिन्तन - इन छः उपायों को मानव कर्तव्य के रूप में निरूपण किया गया है। महर्षि मनु महाराज ने अपनी कृति मनुस्मृति में इन कर्तव्यों को धर्म के रूप में दस (10) लक्षणों के रूप में निरूपण किया गया है। जैसे-

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।

धी-विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्म लक्षणम् ॥ मनु ० 6 /92.

इस श्लोक में मानव सद्गुणों को दस (10) प्रकारों में विभाजन किया गया है। जैसे-

1- धृति= धैर्य धारण करना,

- 2- क्षमा= क्षमाशील होना,
- 3-दम= मन को नियंत्रण करना,
- 4-अस्तेय= चोरी ना करना,
- 5-शौच= अन्तः तथा बाह्य शुद्धिकरण,
- 6-इन्द्रिय-निग्रहः = इन्द्रियों को नियन्त्रण करना,
- 7-धी= बुद्धि,
- 8-विद्या= परा- अपरा विद्या,
- 9-सत्य और
- 10-अक्रोध= क्रोध न करना,

इत्यादि कर्तव्य के पालन को ही धर्म बतलाया गया है। वेदानुकूल मनुस्मृति में अन्यत्र कहा गया है –

धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति सुदुस्तरम् । मनु 0 4/242

क्योंकि धर्म के सहाय से दुष्कर-दुःख सागर को जीव तैर जाता है। उपर्युक्त श्लोकों के माध्यम से मानव कर्तव्यों का विश्लेषण किया गया है। अतः अधिकारों का वर्णन करते हुए मनु महाराज कहते हैं-

अनेन विप्रो वृत्तेन वर्तयन् वेदशास्त्रवित् ।

व्यपते कल्मषो नित्यं ब्रह्मलोके महीयते ॥ मनु0 4/260.

एतद्वो अभिहितं सर्वं निःश्रेयसकरं परम् ।

अस्मात् प्रत्युतो विप्रः प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ मनु0 12/116.

अर्थात् वेदशास्त्र के ज्ञाता अर्थात् वेदशास्त्र के ज्ञाता इस व्यवहार से वर्तव्य कर्ता हुआ पाप रहित होकर ब्रह्म के आश्रय में मग्न होकर आनन्द को प्राप्त कर्ता है।

द्वितीय श्लोक में कहा गया है की अपवर्ग या निःश्रेयस प्रदायक समस्त कर्त्तव्य- कर्म को करते हुए परम गति को प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार कर्त्तव्य निर्धारण के माध्यम से अधिकार का निरूपण तथा मानव मूल्यों का उल्लेख स्पष्टाकार में किया गया है।

अतः पर धर्म का व्यावहारिक पक्ष - जो आत्मिक, मानसिक तथा शारीरिक उत्थान करने योग्य है। मनुष्य में मानवत्व और देवत्व का विकास करने वाले, धारण करने वाले उत्तम सुखसाधक श्रेष्ठ व्यावहारिक एवं सामाजिक कर्त्तव्य, मर्यादा और विधान व कानून को धर्म कहलाता है। व्यावहारिक क्षेत्र में होने के कारण कर्त्तव्य- कर्म है। जिसमें देश-काल-परिस्थितिवश कुछ एक परिवर्तन आ सकते है। जैसे-

- 1- सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्. मनु0 4/138,
- 2- योषितां धर्ममापदि- मनु0 9/56,
- 3- एष धर्मः स्त्रीपुंसयोः मनु 09/103,
- 4- दण्डं धर्मं विदुर्वुधाः मनु0 7/18,
- 5- राजधर्मान् प्रवक्ष्यामि मनु 07/9,

आगे फिर से बोला गया है-

वेदस्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतद् चतुर्विधं प्राहु साक्षात् धर्मस्य लक्षणम् ॥ मनु0.

इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन शास्त्र में भी कहा गया है। जैसे- वैशेषिक दर्शन के प्रणेता ने प्रारम्भ करते समय बोले –

- 1- अथातो धर्मं जिज्ञासा। पूर्व मीमांसा सूत्र 1/1/1 0

अथ को धर्मः, किं तस्य लक्षणं इति चेत्, तद् उच्यते - यागादिरेव धर्मः "तत्तल्लक्षणं वेदप्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म इति"- पूर्व मीमांसा सूत्र में धर्म को परिभाषित करते हुए महर्षि कणाद पहले यज्ञ आदि क्रिया को धर्म की संज्ञा प्रदान किया, पश्चात वेद प्रतिपादित तथा इष्ट साधक वाला प्रयोजन हो उसे ही धर्म नाम से परिभाषित किया है।

- 2- अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः। वैशेषिक सूत्रः 1/1/1

- 3- यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः। वैशेषिक सूत्रः 1/1/2.
- 4- चोदनालक्षणो धर्मः। पूर्व मीमांसा 1/1/2

इसी प्रकार धर्म को मानव के कर्तव्य- कर्म के रूप में निरूपण किया गया है। इसके अन्तर्गत समस्त प्रकार के नैतिक प्रत्ययों का विशद विश्लेषण किया गया है।

B) अर्थ (Wealth)-

पुरुषार्थ चतुष्टय में अर्थ द्वितीय पुरुषार्थ के रूप में परिगणित होता है। अर्थ को संकुचित और व्यापक दोनों ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है। 1- धर्म को समझने के लिए अर्थ को समझना आवश्यक है। अर्थ यहाँ साधन के रूप में प्रयुक्त हुआ है। 2- अर्थ का सम्बन्ध धन-संपत्ति के साथ होने कारण भौतिक उपकरण तथा भौतिक सुख से है। मनुष्य को अपने जीवन में अनेकों कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों की पूर्ति हेतु अर्थ की आवश्यकता होती है। अभिप्राय यह है की जीवन की सभी कामना, सुविधाय, इच्छा को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। भारतीय नीतिशास्त्र में अर्थ की महत्ता और आवश्यकताओं पर विशेष जोर दिया गया है। जैसे- महाभारत में अर्थ को जीवन का उच्चतम धर्म बतलाया गया है।

धनमाहुः परं धर्मं धने सर्वप्रतिष्ठितम् ।

जीवन्ति धनिनोलोके मृता येत्वधना नराः ॥

ये धनादपकर्षन्ति नरः स्ववल् स्थिताः।

ते धर्मार्थकामं च प्रमथन्ति नरं च तम् ॥ महाभारत उद्योग पर्व 72 /23 -24

इसका अभिप्राय यह है की जो धन से अनादृत है वह धर्म से भी अनादृत होते है। अर्थ के बिना जीविका निर्वाह असंभव है। मानव को सभी सुखों का उपभोग धर्मानुकूल करना चाहिए। मानव जीवन में सुखों को सर्वोपरि महत्ता दी गई है। इसीलिए मनु महाराज जी ने त्रिवर्ग को ही श्रेय बतलाया है - अर्थात् - धर्म, अर्थ व काम। आगे कहते हैं –

धर्मार्थादुच्यते श्रेयः कामार्थो धर्म एव च ।

अर्थ एवेह वा श्रेयस्त्रिवर्ग इति तु स्तिथिः ॥ मनु 2/224

अर्थ के अभिप्राय को और अधिक महत्ता प्रदान करते हुआ कहते हैं- की अर्थ और काम यदि धर्म विरुद्ध हो तो ऐसे अर्थ को त्याग देना चाहिए।

परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ ।

धर्मचाप्यसुखोदकं लोकं विकृष्टमेव च ॥ मनु 0 4/176

C) काम-

अध्ययन- अध्यापन कि दृष्टि में काम तृतीय पुरुषार्थ है। मानव जीवन में इसका बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। कामना -भावना तथा इन्द्रिय सुख इसका प्रधान लक्षण है। जीवन की सहज प्रवृत्ति इन्द्रिय सुख है। काम के कारण ही मनुष्य यौन तृप्ति, संतानोत्पत्ति करके ही पितृ ऋण से मुक्त होते हैं। आनंद में लीन रहना ही काम है। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा है –

संप्रमोदमलः कामो भूयः स्वगुणःवर्जितः । महाभारत शान्ति पर्व 133/10

धर्मार्थविरोधेन कामं सेवेत् । अर्थशास्त्र -17

अर्थात् काम के वशीभूत होकर अपना धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। आचार्य कौटिल्य ने काम को ही अंतिम पुरुषार्थ के रूप में मान्यता प्रदान की है। सो इसका पालन हेतु उपदेश दिया है। आचार्य कौटिल्य के मान्यता को देखते हुए कुछ भारतीय चिंतकों ने काम को प्रथम पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया है। जैसे आचार्य वात्सायन ने काम को विस्तृत अर्थ में अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं की काम- सभी इन्द्रिय से प्राप्त सुख को परभाषित करते हैं। महर्षि मनु काम शब्द को लक्षण प्रदान करते हुए कहते हैं-

तमसो लक्षणं कामो - मनुस्मृति -12/38

काम तामस लक्षण युक्त है। साथ साथ काम को धर्म तथा अर्थ का स्रोत के रूप में स्वीकार किया है। काम के तीन आधार बतलाया है-

1- जैविकीय, 2- सामाजिक और 3- धार्मिक.

व्यक्ति अपनी विभिन्न इच्छाओं की संतुष्टि जैविकीय आधार पर करता है। इच्छाओं की तृप्ति न होने पर मानव मन में निराशा उत्पन्न होती है। सो ग्रंथियों का विकास, जैविकीय विकास, मानसिक विकास रुक जाता है। यहाँ काम ही उसे इस संत्रास से उबार पते है। जहाँ तक काम का सामाजिक आधार है यह

भी महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से मानव अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ती करता है। उदहारण के तौर पर कहा जा सकता है की विवाह के माध्यम से पति-पत्नी संतुष्टिपूर्वक प्रजनन के द्वारा पारिवारिक और सामाजिक निरन्तरता को प्रचलित या कायम रखता है। इसके साथ सामाजिक मूल्य तथा उत्तरदायित्वों का निर्वाह करता है। अन्तः में धार्मिक आधार पर काम इन्द्रिय संतुष्टि पूर्वक अपनी इच्छाओं से विरत होकर आत्मिक विकास के मार्ग में धर्म की ओर अग्रसर होता है। धीरे, धीरे ईश्वर के प्रति अनुराग वश मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होता है। मनु महाराज कहते है –

प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला । मनु 05/56,

ध्यायतो विषयान्मुनसः संगस्तेषूपजायते ।

सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधो अभिजायते ॥ गीता 2/62.

क्रोधात् भवति संमोह संमोहात्स्मृति विभ्रमः ।

स्मृतिभ्रंशादबुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रनश्यति ॥ गीता 2/63

काम-जनित इच्छाओं को दबाना नहीं चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से मोह, मोह से स्मृतिभ्रम, स्मृति भ्रम से बुद्धिनाश अंत में बुद्धिनाश से सर्वनाश हो जाता है। तब तो अस्तित्वहीन होकर मूल्य -नैतिकता - धार्मिकता सभी अस्तित्वहीन हो जाता है।

D) अधिकार तथा मूल्यों का विश्लेषण –

प्रायः प्रत्येक भारतीय चिंतकों ने पुरुषार्थ को नैतिकता का आधार माना है। यहाँ पुरुषार्थ चतुष्टय के अंतर्गत धर्म- अर्थ-काम-मोक्ष -इन चारों का विश्लेषण आवश्यक है। भारतीय दर्शनों में मोक्ष के विषय में बहुत ही प्रामाणिकता के साथ व्याख्या प्राप्त होती है। जिसमें मोक्ष को साध्य या लक्ष्य के रूप में देखा गया है। यहाँ इन सभी का विश्लेषण मानवीय उद्देश्यों के सन्दर्भ में किया गया है। यद्यपि ये सभी मूल्य एक ही स्तर के नहीं है। किन्तु भारतीय चिंतकों ने धर्म निरपेक्ष तथा आध्यात्मिक मूल्यों में अंतर स्पष्ट करते हुए आध्यात्मिक मूल्यों को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है।

यहाँ यह विचारणीय है की निम्न मूल्य के अनुपालन से तात्कालिक तथा लौकिक संतुष्टि की प्राप्ति होती है और वह कुछ क्षण में ही समाप्त हो जाता है। अतएव दीर्घ सन्तोष हेतु आध्यात्मिक मूल्यों पर जोर देना आवश्यक है। आध्यात्मिक मूल्य के रूप में धर्म और मोक्ष को ही चिन्हित किया गया है। यहाँ धर्म

तथा मोक्ष की प्राप्ति की प्रणाली विश्लेषण न करते हुए मूल्यों के अनुपालन के माध्यम से मानव अधिकारों का विवेचन आलोच्य विषय है। हमें यह जानना अत्यंत आवश्यक है की समाज में, परिवार में, राष्ट्र तथा भूमण्डल में अपने कर्तव्यों को कैसे चिन्हित करेंगे। जिसके अनुपालन के माध्यम से एक सुन्दर पृथिवी का निर्माण सम्भव हो सके। यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होता है की - क्या सर्वोच्च मूल्य की प्राप्ति मनुष्य के द्वारा संभव है ? या यह केवलमात्र अवधारणा है। इसके उत्तर में सभी भारतीय चिंतक एकमत है की यह संभव है। इसे वर्तमान जीवन के प्रसार में ही प्राप्त किया जा सकता है। प्रकृति कभी भी इस आध्यात्मिक अभिलाषा से विमुख नहीं होती। सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति इसमें सहायक होती है। (सत्त्व-रजः-तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः) अतएव पुरुषार्थ मनुष्यों को परम साध्य, लक्ष्य एवं उद्देश्य है। यहाँ साध्य के साथ-साथ साधन के विषय में भी विश्लेषण किया गया है। अर्थात् मनुष्य के अधिकारों को चिन्हित करते हुए अनुपालन का उपदेश किया गया है। भारतीय नीतिशास्त्र में यह जीवन दर्शन विश्व का अकेला और अनुपम जीवन दर्शन है। जहाँ जीवन के प्रति मोह तो योग भी है, बन्धन है तो मुक्ति भी है, कामनासा के साथ-साथ साधना भी है, आसक्ति के साथ-साथ त्याग भी है। यहाँ भौतिकता को प्रमुखता न देते हुए आध्यात्मिकता पर बल दिया जाता है। किन्तु भौतिकता का खंडन नहीं किया गया है। यही मानवों के लिए लाभपद है।

(III)

अन्तः में उपसंहार के रूप में कहा जा सकता है की मानव निर्माण हेतु कर्तव्य-कर्म से अर्जित अधिकार आपको मोक्ष या निःश्रेयस तक पहुंचा सकता है। आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिशतक में उल्लेख किया है-

आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च समन्यमेतत् पशुभिरनरानाम् ।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीना पशुभिः समाना ॥

चाणक्यनीति में इसका अभिप्राय यह है की आहार-निद्रा भय, मैथुन इत्यादि पशुओं में भी पाई जाती है, इसके अतिरिक्त धर्म ही एक ऐसा तत्व है, जो मनुष्य को पशु से पृथक् करता है। ऋग्वेद में इसे ही चरितार्थ करने हेतु कहते हैं - ऋते ज्ञानात्र मुक्तिः ।

अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। परार्थ भावना ही मूल्य है, ज्ञान ही मूल्य है। इसी भावना को चरितार्थ करने के लिए कहा गया है-

समानो मन्त्रः समितिः समानं मनः सहचित्तमेषाम ।

चूँकि मानव मूल्यों का निर्धारण कर्तव्य-कर्म से होता है, यहाँ सुकरात का कथन बहुत ही सार्थक है
की -सद्गुण ही धर्म है (virtue is knowledge) ।

अतःपर -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

- मिश्र, डॉ सुनील चंद्र(2002), *पाश्चात्य नीतिशास्त्र*, उत्तर प्रदेश: साहित्य भवन पब्लिकेशन,
शर्मा, आर० पी० (2001) *नीतिशास्त्र*, नई दिल्ली: भारती भवन (पब्लिशर & डिस्ट्रीब्यूटर्स)
शर्मा, आर० पी० (2001), *भारतीय दर्शन*, नई दिल्ली: भारती भवन (पब्लिशर & डिस्ट्रीब्यूटर्स),
पाठक, दिवाकर (1974), *भारतीय नीतिशास्त्र*, पटना: बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी
सक्सेना, डॉ लक्ष्मी (1987), *नीतिविज्ञान के मूल सिद्धांत*, लखनऊ :उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान
उपाध्याय, आचार्य बलदेव (1997), *भारतीय दर्शन*, वाराणसी: शारदा मन्दिर,
मिश्र, डॉ सुनील चंद्र (2002), *भारतीय दर्शन*, आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन, (उत्तर प्रदेश)
शास्त्री, आचार्य उदयवीर (2019), *सांख्यदर्शन*, दिल्ली: विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
शास्त्री, आचार्य राजवीर (2001), *योगदर्शन* (तृतीय संस्करण), दिल्ली: आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
कुमार, डॉ सुरेन्द्र (2017), *मनुस्मृति* (आठवाँ संस्करण), दिल्ली: विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
सरस्वती, स्वामी समर्पणानन्द (2001), *गीता* (द्वितीय संस्करण), दिल्ली: विजयकुमार गोविन्दराम
हासानन्द
शास्त्री, आचार्य उदयवीर (2019), *मीमांसा दर्शन*, दिल्ली: विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई
सड़क
भट्ट, आचार्य अन्नं (2012), *तर्क संग्रह* (दीपिका सहित ed.), डॉ अर्कनाथ चौधरी, राजस्थान: जगदीश
संस्कृत पुस्तकालयरानी,
आचार्या राकेश (1970), *ऋग्वेद* (प्रथम संस्करण), स्वामी दयानन्द संस्थान, दिल्ली: वेद मन्दिर, महात्मा
वेदभिक्षु सेवाश्रम,

शास्त्री, पण्डित रामनारायण दत्त (2021), *महाभारत*, उत्तर प्रदेश: गीताप्रेस
सरस्वती, स्वामी दयानन्द (2009), *सत्यार्थ प्रकाश* (सत्तरवाँ संस्करण), दिल्ली: आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
शास्त्री, आचार्य उदयवीर (2019), *वैशेषिक दर्शन*, दिल्ली: विजयकुमार गोविंदराम हासानन्द,
शर्मा, डॉ सत्यप्रकाश (1989), *लौगाक्षि भास्कर कृत अर्थशास्त्र* (हिन्दी भाष्य) द्वितीय संस्करण, मेरठ:
साहित्य भण्डार
गैराला, वाचस्पति (1984), *कौटिल्य अर्थशास्त्र* (हिंदी संस्करण), वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन
Maitra, S. K. (1963), *The Ethics of Hindus*, Kolkata: Calcutta University Press